(7.) पृथकत्व :— विभिन्न वस्तुओं के स्वभाव में जो भिन्नता होती है उसका बोध का कारण पृथकत्व है। यह अमुक इससे पृथक् है, इस प्रकार के पृथक् व्यवहार का असाधारण कारण-रूपी गुण पृथकत्व कहलाते है।

(8.) संयोग :— दो अलग-अलग वस्तुओं के परस्पर सन्निकृष्ट होने पर उसके मध्य स्थापित संबंध को संयोग कहते है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार से कह सकते है— यह उससे संयुक्त है, इस प्रकार के हेतुभूत गुण का नाम संयोग है। यह तीन प्रकार का होता है—
(क) जब एक पदार्थ का गति से संयोग होता है जैसे एक पक्षी का उड़कर पर्वत की चोटी पर बैठना (ख) जब दोनों पदार्थों का की गति से संयोग होता है, जैसे- दो लड़ते हुए पहलवानों का आपस में भिड़ना (ग) जहाँ एक संयोग से दूसरा संयोग उत्पन्न होता है, जैसे- टेबल पर अपने कलम से कागज पर लिखना। यहाँ कागज का संयोग हाथ से है; यहाँ कागज टेबल पर रखा है, इससे हाथ का टेबल के साथ भी संयोग हो जाता है। संयोग

Scanned with CamScanner

हमेशा अनित्य होता है।

(9.) विभाग :— दो संयुक्त पदार्थों के परस्पर विच्छेद का नाम विभाग है। अर्थात् संयोग का नाश करने वाले गुण को विभाग कहते है। विभाग संयोग का ठीक विपरीत है। विभाग के तीन भेद होते है — अन्यतर कर्मज, उभय कर्मज एवं विभागज। जिस स्थान पर एक ही द्रव्य की क्रिया से विभाग होता है, उसे अन्यतर कर्मज विभाग कहते हैं। जैसे — वृक्ष से पक्षी का उड़ान। जब दोनों द्रव्य की क्रिया से विभाग होता है, तब उसे उभय कर्मज विभाग कहते है। जैसे - दो पहलवानों का एक-दूसरे से अलग होना। विभागज - विभाग में एक विभाग से दूसरे विभाग की उत्पत्ति होती है, जैसे - हाथ से वृक्ष की शाखा के छूटने पर देह का वृक्ष से विभाग।

Scanned with CamScanner